एक नूर ते सभ जग उपजया

राधास्वामी सत्संग ब्यास

एक नूर ते सभ जग उपजया

लेखन एवं चित्रण

विक्टोरिया जोन्ज़

राधास्वामी सत्संग ब्यास

प्रकाशक :
जे. सी. सेठी, सेक्रेटरी
राधास्वामी सत्संग ब्यास
डेरा बाबा जैमल सिंह
पंजाब 143 204, भारत

For internet orders, please visit:
www.rssb.org

भारत में किताबें ख़रीदने के लिए कृपया नीचे लिखे पते पर लिखें:
राधास्वामी सत्संग ब्यास
बी. ए. वी. डिस्ट्रिब्यूशन सेंटर, 5 गुरु रविदास मार्ग
पूसा रोड, नई दिल्ली 110 005

बच्चों के लिए अन्य पुस्तकें:
आत्मा का सफ़र

© 2009 राधास्वामी सत्संग ब्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण 2009

16 15 14 13 12 11 10 09 8 7 6 5 4 3 2 1

ISBN 978-81-8256-825-9

मुद्रक : थॉम्सन प्रैस (इंडिया) लि०

अनेक रूपोंवाले उस एक को समर्पित ...

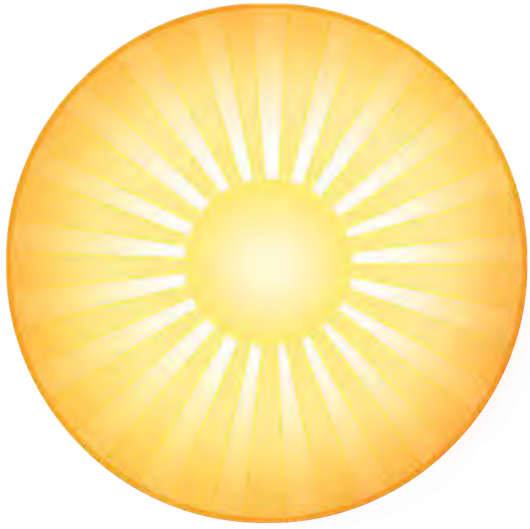

क समय की बात है,
एक आत्मा
धरती पर
जन्म लेनेवाली थी।

शायद तुम ही वह
आत्मा थी...

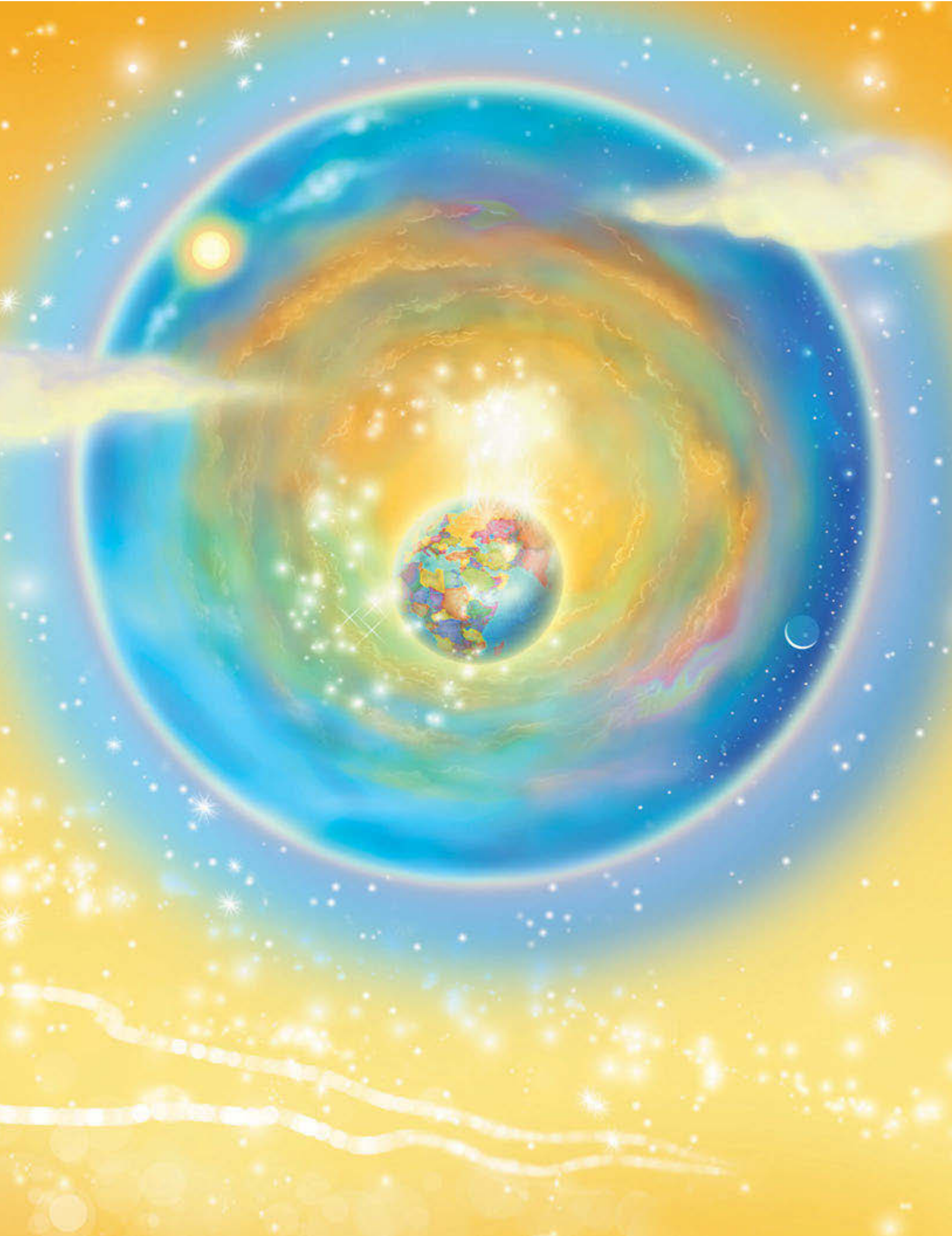

स भी उत्सुकता से बच्चे के पैदा होने का इन्तज़ार कर रहे थे।

घर में खुशियाँ छाई हुई थीं और रिश्तेदारों और दोस्तों से
बहुत सुन्दर तोहफ़े भी आए हुए थे।

रमात्मा भी तोहफ़े देकर
उस आत्मा के जन्म की ख़ुशी मनाना चाहते थे।

परमात्मा जानते थे कि दुनिया में
बहुत-से लोग उन्हें भूल चुके हैं और वे चाहते थे कि
यह नन्ही-सी आत्मा लोगों को, उनके हर चीज़
में मौजूद होने की याद दिलाए।

तो जन्म से कुछ पहले, परमात्मा ने आत्मा को अपने
पास बुलाया, वह उपहार देने के लिये जो एक दिन
उसको दुनिया के लोगों के साथ बाँटने थे।

आत्मा ने परमात्मा को सबसे पहले संगीत की एक चमकती हुई धारा के रूप में देखा। यह धारा दृष्टि की सीमाओं के पार बही जा रही थी! फिर उस धारा से उभरकर, परमात्मा ने ज्योति का एक शानदार रूप धारण कर लिया! आत्मा को अंजली में उठाकर, बाहों में भरते हुए वे बोले, "मेरे साथ आओ, नन्ही आत्मा, और समझो कि वह एक से अनेक कैसे बन जाता है।"

फिर उन्होंने झिलमिलाती हुई धारा को छपकाया जिससे प्रकाश की सुरीली तरंगें हवा में ऊँची उछल गईं! वे दोनों एक विशाल दमकते स्वर पर सवार होकर निकल पड़े और नन्ही आत्मा पूरी तरह रोमांचित हो उठी!

सफ़र में स्वर्ग के कोमल स्वप्नमय रंगों में से गुज़रते हुए वे अन्दर के आकाश में बिखरे सितारों में से तेज़ी से निकल गए। धारा का तेज़ बहाव उन्हें अन्दर-ही-अन्दर, दूर... बहुत दूर, उस जगह पर ले गया जहाँ रचना का केन्द्र है! अत्यन्त गहरे, अन्धेरे, अज्ञात मण्डलों के बीच से निकलते हुए वे आगे-ही-आगे चलते गए, और सरलता से उन महीन परदों को पार कर गए जो एक लोक को दूसरे लोक से गुप्त रखते हैं।

और जब वे आगे... बहुत आगे निकल गए, और निर्मलता की पहली चमकती धुन्ध में बहने लगे, तब उन्होंने अपना आख़िरी मोड़ पार किया...।

हाँ उन्होंने प्रकाश का एक विशाल जगमगाता सागर देखा, इतना निर्मल और स्वच्छ प्रकाश जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती!

उन्होंने हर तरफ़ घूमकर देखा...
दूर-दूर तक फैले परमात्मा के उज्जवल प्रकाश के सिवाय उन्हें और कुछ दिखाई नहीं दिया।

नन्ही आत्मा ने महसूस किया कि प्रकाश का वह सागर, अनन्त प्रेम और शान्ति के अलावा और कुछ नहीं था।

"मैं एक नूर हूँ," परमात्मा ने कहा...

"...परन्तु धरती पर मेरा एक नूर अनेक दीये रौशन करता है।"

फिर दूर की तरफ़ परमात्मा ने इशारा किया और वहाँ आत्मा को सितारों भरे गहरे अन्तरिक्ष में चमकती हुई दुनिया दिखाई दी।

"ध्यान से देखो..." परमात्मा ने कहा।

और नन्ही आत्मा ने ध्यान से देखा... जल्दी ही उसे दिखने लगा कि रचना का हर छोटे-से-छोटा कण भी उस नूर का चमकता हुआ दीया है! और तब नन्ही आत्मा समझ गई... कि सितारे, आकाश, धरती और उसकी हर चीज़ परमात्मा के एक नूर से ही बनी है।

यह देखकर नन्ही आत्मा प्रसन्न और सुरक्षित महसूस करने लगी। उसे लगा कि जैसे वह उसका घर ही हो।

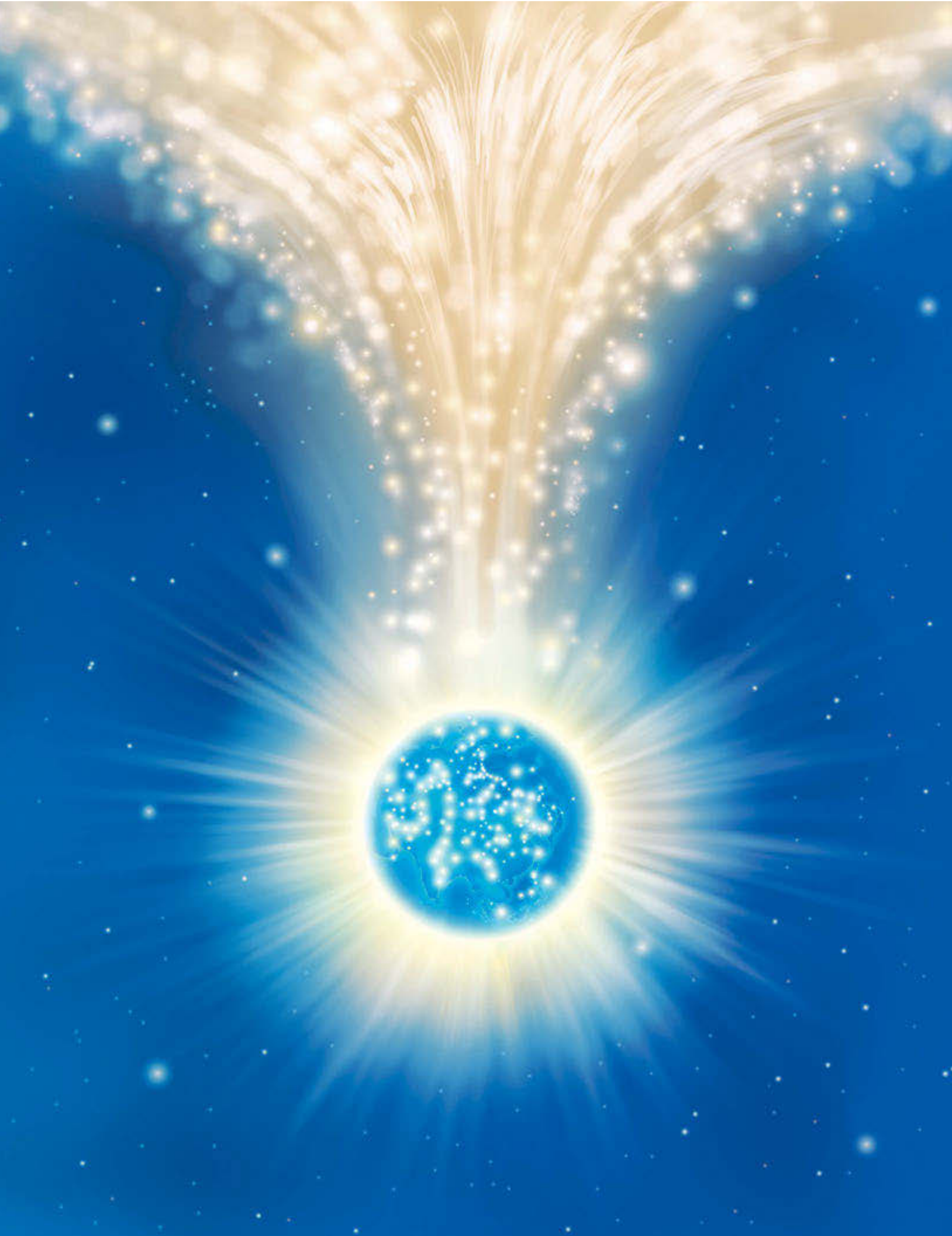

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा,
कि परमात्मा का एक नूर रचना के
सारे दीये रौशन कर रहा है।

"नूर एक, दीये अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

"नन्ही, मेरे नूर में से
आ रही आवाज़ को सुनो,"
परमात्मा ने कहा।

आत्मा नूर की आवाज़ को सुनने लगी जो इन्द्रधनुष
के रंगोंवाली सतरंगी रचना में बहती हुई हरएक चीज़ को
जीवन दे रही थी। पुलकित कर देनेवाली इस आवाज़ को
सुनते ही, नन्ही आत्मा का नाचने, गाने और
ख़ुशी से उछलने का मन किया!

"मैं एक आवाज़ हूँ, लेकिन धरती पर मेरी एक आवाज़
अनेक तराने बन जाती है," परमात्मा ने कहा।

आत्मा, अन्तरिक्ष में घूमती हुई पृथ्वी और
आकाश में टिमटिमाते सितारों के गीत सुनने
लगी। वह सर्द हवाओं की सरसराहट और
बसन्त में नए पत्तों पर गिरती वर्षा की बूँदों
का मधुर संगीत सुनने लगी।

आत्मा ने छप-छप करती हुई धारा
और समुद्र की गरजती लहरों के गीत सुने।

उसने धरती के जानवरों को एक दूसरे को पुकारती हुई आवाज़ें सुनीं और गर्म रात में झींगुरों और बुलबुलों की तान सुनी। आत्मा ने जीवन के सारे अलग-अलग तराने सुने, लेकिन वह जानती थी कि वह सभी एक हैं क्योंकि वे सभी परमात्मा की एक ही आवाज़ में से निकल रहे हैं।

"ध्यान से सुनो, नन्ही," परमात्मा ने कहा।

नन्ही आत्मा ने और भी ध्यान से सुना... और उसे अजीब भाषाओं में बोलते, गाते और प्रार्थना करते दुनिया भर के लोगों के गीत सुनाई देने लगे, लेकिन उन्हें वह समझ नहीं पा रही थी।

"अब ज़रा प्रेम से सुनो," परमात्मा ने कहा।

तब नन्ही आत्मा ने प्रेम से सुना... और जल्द ही उसे धरती के हर देश के हर कोने से आ रहे ख़ुशी में झूमकर गाए तराने और ग़म के दर्द-भरे नग़में सुनाई देने लगे।

और तब नन्ही आत्मा जान गई... कि शब्दों के बिना भी वह सब कुछ समझ सकती थी... क्योंकि हर दिल एक ही भाषा में हँसता, रोता और प्यार करता है। इतना समझते ही नन्ही आत्मा, इस दुनिया के हर जीव के लिये, दया के प्रकाश से सराबोर हो गई।

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा,
कि मैं हर गीत को प्रेम से सुनूँ क्योंकि रचना का
हर कण परमात्मा की एक आवाज़
को ही गुनगुना रहा है।

"नूर एक, दीये अनेक
आवाज़ एक, गीत अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

"चलो चलें!" परमात्मा ने कहा।

पलक झपकते ही वे सितारों के बीच से बिजली की तरह कौंधते हुए निकल गए और तेज़ी से एक शानदार गुप्त स्थान पर जा पहुँचे। सुनहली धुँध के झिलमिलाते परदे के दूसरी ओर पृथ्वी का नज़ारा दिखाने के लिये परमात्मा ने हाथ लहराया और एक खिड़की खोल दी! वहाँ घास के हरे-भरे मैदानों में अद्‌भुत जंगली जानवर घूम रहे थे।

जानवर कहीं डर न जाएँ, इसलिये परमात्मा ने धीमे से फुसफुसाकर कहा, "यह समझ लो नन्ही आत्मा कि रचना करनेवाला मैं एक रचयिता हूँ, लेकिन धरती पर मैं अनेक जीवों का रूप धारण कर लेता हूँ।"

यह जानकर नन्ही आत्मा आनन्द विभोर हो गई कि सभी जीव परमात्मा की अनुपम, असाधारण धुन और नूर से बने हैं और यह कि रचनाकार आप ही धरती पर हर जीव की भूमिका निभा रहा है!

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा कि
रचना के हर जीव के प्रति मैं स्नेही और मृदुल रहूँ
क्योंकि परमात्मा ख़ुद हर जीव में बसते हैं।

"नूर एक, दीये अनेक
आवाज़ एक, गीत अनेक
रचयिता एक, जीव अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

मुझे कसकर पकड़ लो, नन्ही आत्मा!" कहते हुए परमात्मा ने एक ऊँची विराट् चट्टान पर पहुँचने के लिये उड़ान भरी।

यहाँ से आत्मा, परमात्मा के नूर और आवाज़ को रचना के महान् स्रोत में से उमड़ते हुए देख सकती थी, जो नूर की गूँज से गरजते हुए विशाल झरने जैसा दिख रहा था!

"मैं एक शक्ति हूँ! लेकिन धरती पर मेरी यही एक शक्ति अनेक लोगों का रूप ले लेती है," परमात्मा ने उस गरजते हुए आश्चर्यजनक झरने के ऊपर से कहा।

नन्ही आत्मा ने नीचे की ओर देखा कि परमात्मा की वह एक शक्ति झरझर करती हुई धरती पर लोगों को जीवन देती जा रही थी और उनकी आँखों और दिलों में यह शक्ति दमक रही थी!

हालाँकि सब लोग अलग-अलग रंग-रूप और आकार के थे पर नन्ही आत्मा यह जानकर आनन्दित हो गई कि वे सब लोग असल में एक थे!

और तब वह नन्ही आत्मा समझ गई... कि परमात्मा ख़ुद चुपके से, धरती पर हर देश के हर इन्सान की भूमिका अदा करने आये हैं!

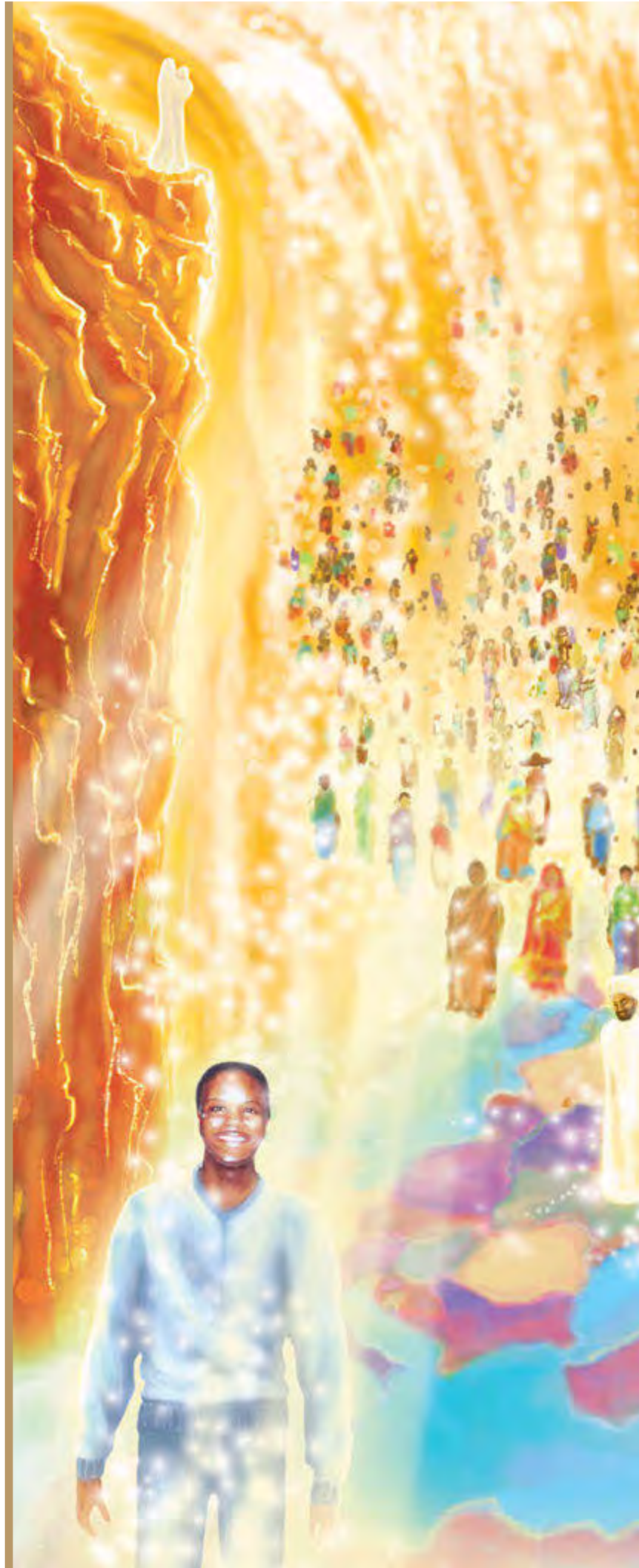

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा,
कि मुझे प्रेम उस एक परमात्मा से करना है
जिसका नूर धरती के हर देश के
हर इन्सान में रौशन है।

"नूर एक, दीये अनेक
आवाज़ एक, गीत अनेक
रचयिता एक, जीव अनेक
शक्ति एक, लोग अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

प्र

काश और आवाज़ के अद्‌भुत झरने पर,
नीचे की ओर, तूफ़ानी सवारी करते हुए,
नन्ही आत्मा को साथ लेकर परमात्मा
ने कहा, "आओ चलें!"

जब वे धरती के ऊपर, आकाश में पहुँचे तब
वहाँ रुककर, शान्त गुलाबी बादलों के बीच में
मँडराने लगे।

"मैं एक प्यार हूँ, मेरी बच्ची, लेकिन धरती
पर यह प्यार बहुत-सी राहों में बँट जाता है।"

नन्ही आत्मा ने नीचे देखा कि धरती पर
दुनिया भर के लोग अलग-अलग राहों पर
चल रहे थे और हर राह प्रकाश के एक
मन्दिर की ओर जा रही थी!

परमात्मा और आत्मा बहते हुए, चुपके-चुपके,
मन्दिर के पास, और पास आते गए... और फिर
धीरे से मन्दिर के अन्दर चले गए!

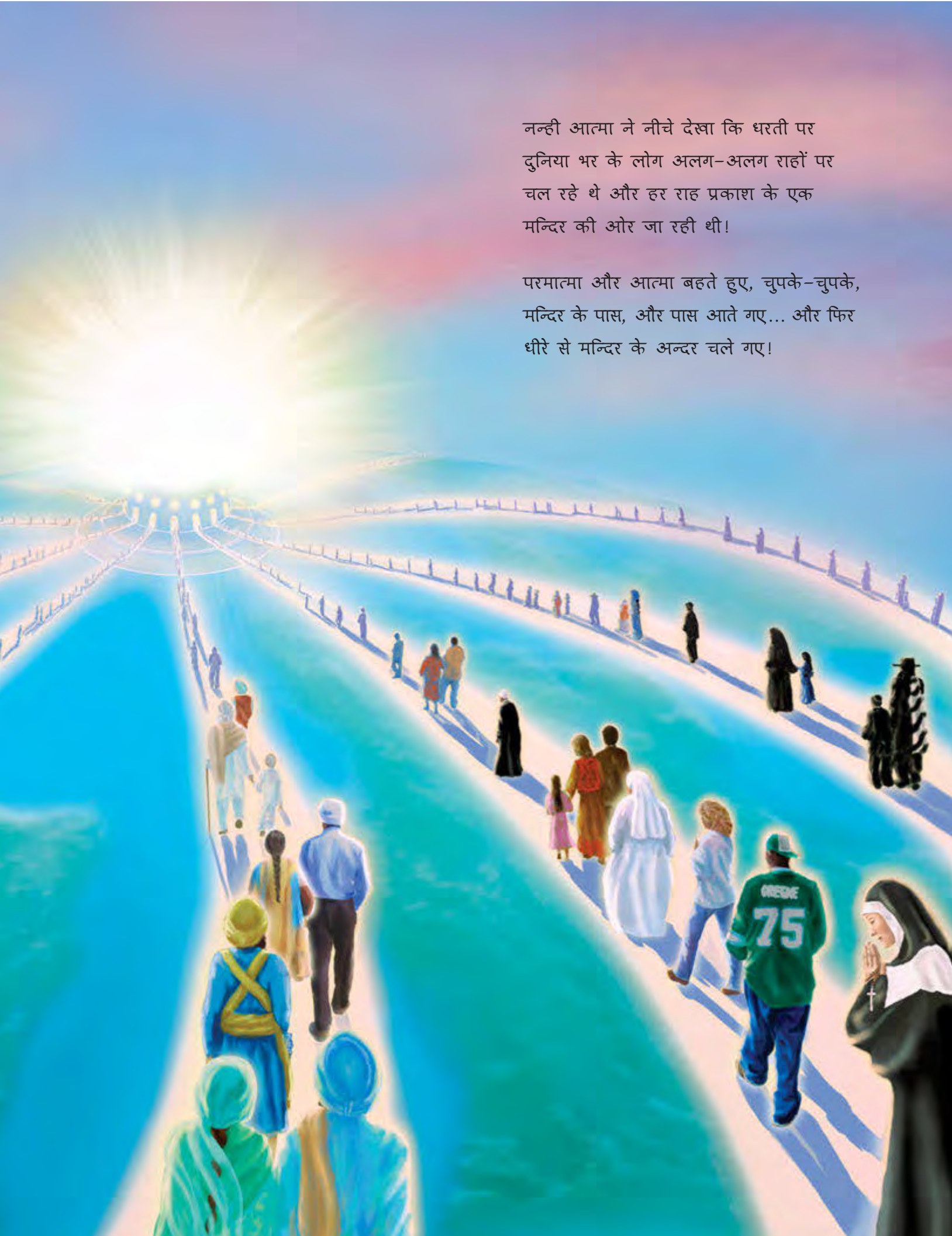

अन्दर पहुँचने पर...
नन्ही आत्मा ने देखा कि प्रकाश
का वह मन्दिर तो लोगों के दिल में
जगमगा रहा परमात्मा का प्यार ही था।

आत्मा ने देखा कि जो लोग अलग-अलग राहों से आ
रहे थे वे सब... एक साथ ...प्रकाश की एक ही सीढ़ी से ऊपर
चढ़ रहे थे। और तब नन्ही आत्मा जान गई कि यही वह जगह है जहाँ
परमात्मा की ओर जानेवाली सभी राहें एक राह बन जाती हैं - प्रेम की राह...।

नन्ही आत्मा ने सोचा, मुझे हमेशा याद रखना होगा कि
इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता कि परमात्मा की भक्ति
के लिये हम किस राह पर चलते हैं क्योंकि
वे सभी राहें अच्छी हैं, कारगर हैं, जो
उनके प्रेम की ओर ले जाती हैं।

"नूर एक, दीये अनेक
आवाज़ एक, गीत अनेक
रचयिता एक, जीव अनेक
शक्ति एक, लोग अनेक
प्रेम एक, राहें अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

क उसी पल रचयिता का नूर, आवाज़, शक्ति और प्रेम धीरे-धीरे आपस में मिलकर घूमने लगे और तब तक घूमते रहे जब तक एक नहीं हुए... फिर, स्थिर हो गए... आँखों को चकाचौंध कर देनेवाली ऐसी चमक बन गए जिससे आनन्द और शान्ति की अनन्त किरणें निकल रही थीं।

"उस एक को देखो!" परमात्मा ने कहा।

यह देख नन्ही आत्मा विस्मित होकर अचम्भे में पड़ गई और उसी क्षण असीम आनन्द से परिपूर्ण भी हो गई। लेकिन, जल्दी ही उसे चिन्ता होने लगी... कैसे वह इतने स्पष्ट, सुन्दर और बड़े शब्द खोजेगी, जो इस अचम्भे का वर्णन कर सकें?

परमात्मा ने, जो सब कुछ सुनते हैं, नन्ही आत्मा के दिल में छिपी मौन पुकार को सुन लिया।

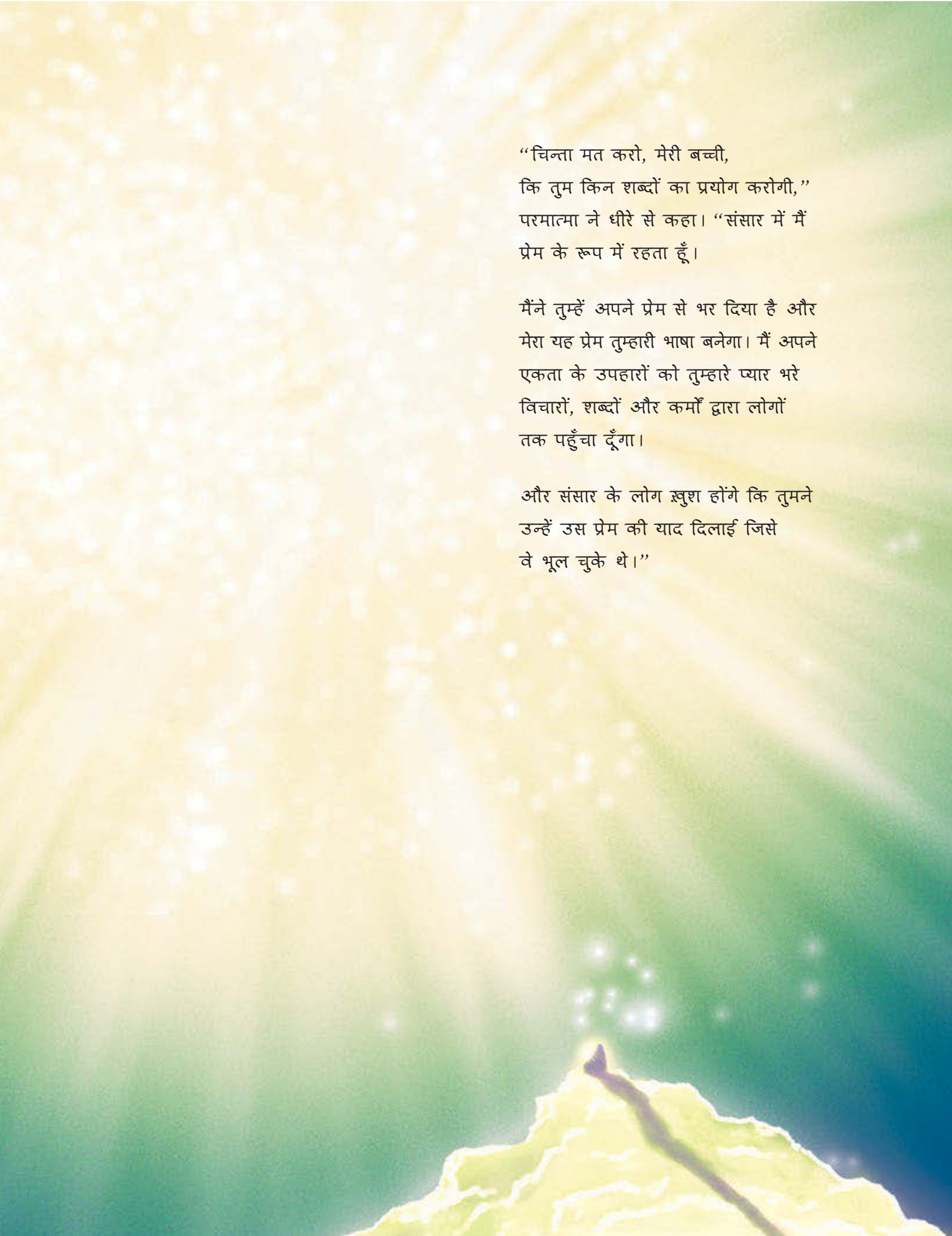

"चिन्ता मत करो, मेरी बच्ची,
कि तुम किन शब्दों का प्रयोग करोगी,"
परमात्मा ने धीरे से कहा। "संसार में मैं
प्रेम के रूप में रहता हूँ।

मैंने तुम्हें अपने प्रेम से भर दिया है और
मेरा यह प्रेम तुम्हारी भाषा बनेगा। मैं अपने
एकता के उपहारों को तुम्हारे प्यार भरे
विचारों, शब्दों और कर्मों द्वारा लोगों
तक पहुँचा दूँगा।

और संसार के लोग ख़ुश होंगे कि तुमने
उन्हें उस प्रेम की याद दिलाई जिसे
वे भूल चुके थे।"

परमात्मा एक लम्बे क्षण तक नन्ही आत्मा को देखते रहे और फिर बोले।

"नन्ही आत्मा, अब, जब कि तुम जान गई हो कि एक से अनेक कैसे बनता है, अब समय आ गया है जब तुम संसार में जाकर अपनी जगह लो। वे उत्सुकता से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहे हैं।"

नन्ही आत्मा ने नीचे झुकते हुए धीरे से कहा, "इन एकता के उपहारों के लिये मैं आपकी आभारी हूँ। अब मैं जाने के लिये तैयार हूँ, लेकिन आपसे बिछुड़ने का मुझे दु:ख है।"

नन्ही आत्मा को देखकर, परमात्मा, मीठी सुनहरी धूप की तरह मुसकराए, "याद रखना," उन्होंने धीरे से कहा, "मैं हमेशा तुम्हारे साथ हूँ और एक दिन तुम्हें घर वापस आने का रास्ता बताऊँगा, जिससे तुम अनेकता से फिर एकता में लौट सको।"

शान्त और प्रसन्न आत्मा अब मुसकराने लगी। परमात्मा ने धीरे से अपना विशाल नूरानी हाथ नन्ही आत्मा के चेहरे पर आशीर्वाद देते हुए फेरा और धीरे-धीरे वह दोपहर के सूरज की तरह चमकने लगी।

ल्दी ही पृथ्वी पर एक
शानदार समारोह शुरु हो गया!

एक नन्हें बच्चे का जन्म हुआ, ऐसा
शान्त शिशु जिसका चेहरा नूर, आनन्द
और अद्‌भुत रहस्य से चमक रहा था।

वह गहरी नींद सो रहा था, लेकिन
अन्तर की गहराई में...

...उस शिशु की आत्मा पूरी तरह जागृत थी,
परमात्मा की याद में लीन, एक-एक करके
उन अनमोल उपहारों के लिये
धन्यवाद देती हुई...

"नूर एक, दीये अनेक
आवाज़ एक, गीत अनेक
रचयिता एक, जीव अनेक
शक्ति एक, लोग अनेक
प्रेम एक, राहें अनेक"

...नन्ही आत्मा ने कहा,
ताकि जो उसने सीखा है वह याद रख सके
और एक दिन उसे दुनिया के लोगों के साथ बाँट सके।

एक नूर ते सभ

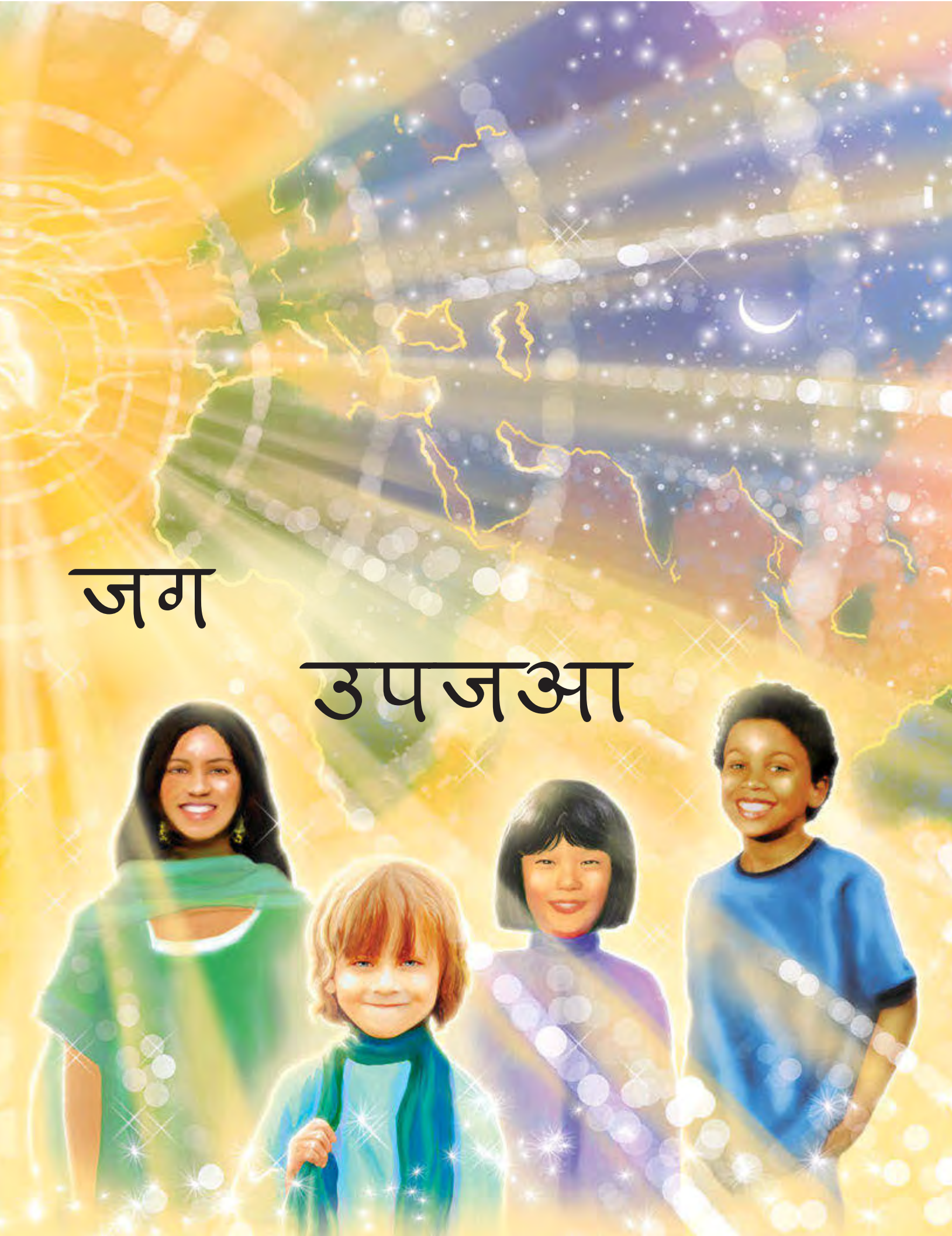
जग
उपजआ

Ek Noor Te Sab Jag Upajeaa
(Hindi)

ISBN 978-81-8256-825-9